ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोधभूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 654-659

आधुनिक कबीर : नागार्जुन

निधि कुमारी
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा
ई–मेल – nidhisam145@gmail.com

सारांश

हिन्दी साहित्येतिहास ग्रन्थ में ज्ञानाश्रयी भक्तिकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीर की तरह आधुनिककालीन कवि नागार्जुन ने भी अपनी रचनाओं, काव्यों के माध्यम से समाज में व्याप्त छूआछूत, पाखण्ड, अंधविश्वास, बाह्यआडंबर, सत्ताधीशों, मठाधीशों आदि के खिलाफ बेबाकी से अपने विचारों को रखनेवाले जन समाज के समर्थक के रूप में प्रस्तुत होते हैं। बाबा नागार्जुन पूँजीवादी व्यवस्था की पैतरेबाजियों और शोषक वर्ग की संवेदनहीनता को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

कबीर की भाषा के सम्बन्ध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि "वे वाणी के डिक्टेटर थे।[६] इनका भाषा कर जबरदस्त अधिकार था। वहीं जनकवि नागार्जुन के सम्बन्ध में डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं कि "नागार्जुन की बीहड़ कल्पना रिक्शा खींचने वाले, फटी विवाइयॉ वाले, कुलिश कठोर खुरदरे पैरों के चित्र भी आंकती है... मनुष्य के ये वे रूप है जो नागार्जुन न होते तो हिन्दी कविता में शायद ही आ पाते।"

जिस तरह भक्तिकाल में कबीर ने तत्कालीन व्याप्त सामाजिक बुराईयों पर करारा व्यंग्य किया है ठीक उसी प्रकार आधुनिक काल में जनकवि नागार्जुन को 'आधुनिक कबीरश के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

बीज शब्द – ज्ञानाश्रयी, वैष्णव, मिथ्याभिमान, आत्मानुभव, आपातकाल, लोक पीड़ा, सामाजिक विक्षोभ, प्रगतिवाद, धर्म–दर्शन, सर्वांगदर्शन।

ज्ञानाश्रयी भक्तिकाव्यधारा के संत शिरोमणि कबीरदास ने अपने काव्यों के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, बाह्य आडम्बर, तत्कालीन समस्याओं की वास्तविकता की ओर सबका

ध्यान आकृष्ट करने हेतु जिस प्रकार समाज को संचालित करने वाले व्यवस्थापकों के खिलाफ खुलकर बेबाकी व निडरता के साथ अपनी बात काव्य के माध्यम से जनता के बीच रखें हैंयउसी प्रकार आधुनिक काल में बाबा नागार्जुन कबीर के समय भारत में विभिन्न धर्मो और साधनाओं जैसे दृ वैष्णव, शैव, शाक्त, सिद्ध, नाथपंथ, जैन, इस्लाम, सूफी आदि थे स सभी अपने को श्रेष्ठ बताने की होड़ में थे स धर्म के नाम पर पाखण्ड, दम्भ, और आडम्बर ही शेष रह गया था स हिन्दू एवं मुसलमान भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों एवं वर्गों में विभक्त हो चुका था स एक दूसरे की छाया एवं स्पर्श पाप की कोटि में रखा जाता थास उन परिस्थितियों में पड़ा हुआ तत्कालीन समाज छटपटा रहा था स पंडित और पुरोहित स्वयं को ईश्वर का अवतार समझते थे और अपने–अपने विवेकानुसार मौखिक रूप से शास्त्रों को परिभाषित करते रहते थेस उस संक्रमण काल में कबीर ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को इन सभी दुर्बलताओं पर करारा प्रहार किया और उन्हें धर्म का वास्तविक रूप समझाने की चेष्टा की स उन्होंने आडम्बरयुक्त सभी धर्म एवं उनके मिथ्याभिमान की खुलकर आलोचना किया और बोले कि पंडित वेद की गलत व्याख्या कर रहे हैं :–

"पंडित वाद बदन्ते झूठा।"[1]

और कहते है कि पंडितों तुम वेद, पुराण पढते तो हो पर राम नाम के वास्तविक तत्व को नहीं समझता हैस इसलिए अन्त में तुम्हारे मुख में धुल पड़ेगी :–

"पाण्डेय कौन कुमति तोहि लागी,
तू राम न जपहि अभागी।
वेद पुराण पढ़त अस पाण्डेय,
खर चन्दन जैसे मारा सस
राम नाम तत समझत नाही,
अति परे मुख छारा स
वेद पढ़या का यह फल पाण्डेय,
सब घटि देखौ रामा सस"

कबीरदास जी निम्नश्रेणी की जाति जुलाहा में जन्मे थे, परन्तु काशी में जन्म लेने के कारण वे ब्राह्मणत्व के गढ़ में सीधे प्रविष्ट हो गये थे और वहॉ निम्न कोटि की जातियों पर ब्राम्हण द्वारा किये जा रहे अत्याचार को कबीरदास ने पग–पग पर भोगा था और उसी सत्य का उद्घाटन करने में उन्होंने रंचमात्र भी संकोच नहीं किया स जिन लोगों के पक्ष में पत्थर, पानी अर्थात् मूर्तियों और तीर्थ खड़े थे, उनके खिलाफ कबीर को कविता का शास्त्र खड़ा करना पड़ास

आज जिस जनवाद का जयघोष विश्व में चतुर्दिक गॅूज रहा है वह कबीर की तीक्ष्ण एवं पैनी अंतर्दृष्टि ने पन्द्रहवीं शताब्दी में ही देख लिया थास जो हम आज देख रहे है, अनुभव कर रहे है स वह महात्मा कबीर ने तब अनुभव किया जब रुढियों की जंजीरों में पूरा समाज बंदी बना हुआ छटपटा रहा था स डॉ. शुकदेव के शब्दों में :– "कबीर ने जिस जनवाद की स्थापना की कोशिश की थी वह शास्त्र समर्थित नहीं है स आत्मानुभव और आत्म साक्षात्कार की उपज है स कबीर के यहाँ आँख बंद करके श्रद्धा से स्वीकार करने वाला कोई रास्ता नहीं है स उन्होंने खुली आँख से, खुले दिमाग से सब कुछ सुना था, जाना था और जितना जहाँ तक व्यर्थ था उसे निर्भीकता से अस्वीकार कर दिया।"[2] ठीक उसी प्रकार आधुनिक युग में बाबा नागार्जुन ने जनता के हित के लिए किसी को भी नहीं बक्शा, अपनी कविताओं में अपने व्यंग्य वाणी से सबको साधा स अपने दौर की शायद ही कोई राजनीतिक घटना और शासन के अत्याचार की कोई बात हो, जिसे नागार्जुन ने अपनी कलम की नोक न बनाया हो स स्वतंत्रता आन्दोलन हो, आजादी से मोह भंग, भारत पर चीनी आक्रमण, नक्सलवाड़ी आन्दोलन, भारत–पाक युद्ध, बिहार आन्दोलन, आपातकाल में इन्दिरा गाँधी की बढती तानाशाही, सम्पूर्ण क्रांति की विफलता, जनता पार्टी का विघटन, संजय गाँधी का मनमानापन, अज्ञेय की जय जानकी यात्रा, भाजपा का राज्यारोहण, शिवसेना का उग्र हिन्दुवाद, बालठाकरे का हिन्दू राष्ट्र का एलान, बाबरी मस्जिद का ध्वंस, देश भर में मजदूरों–किसानों, दलितों पर अत्याचार, बिहार में सामंतवाद, बिहार में सामूहिक नरसंहार, हरिजन दहन, सैकड़ों ऐसी राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाएँ सबसे पहले नागार्जुन की काव्य विषय बनी। जो अपने समय के समाज, राजनीति और मनुष्य पर क्रूर व्यंग्य है स आज उनकी लगभग सभी कविताएं बीतते समय के साथ प्रासंगिक होती जा रही हैस बाबा नागार्जुन ने अपने दुःख और क्षोभ से उपजी कटूक्तियों से तानाशाहों, बर्बर जमाखोरों, धर्म ध्वजियों की बखिया उधेड़ दी स जैसा नामवर सिंह ने कहा है कि :– "व्यंग्य की विदग्धता ने ही नागार्जुन के अनेकात्मक कविताओं को कालजयी बना दिया है स इसीलिए यह निर्विवाद है की कबीर के बाद हिन्दी में नागार्जुन से बड़ा व्यंगकार अभी तक कोई नहीं हुआ स नागार्जुन के काव्य में व्यक्तिओं के इतने व्यंग्य चित्र है कि उनका एक विशाल एलबम तैयार किया जा सकता है स बाबा नागार्जुन कोई कोरे कवि नहीं थे। एक सक्रिय जन पक्षधर थे इनकी कविता का स्वर जनता की हिलोरों के साथ उठता– गिरता था। जनता जो महसूस करती थी, वह बाबा की कलम लिखती थी स वे सीधे जनता से प्रतिबद्ध खालिस जनकवि थे। "ङ कभी भी साधारण जनों से अलहदा नहीं हुए स लोक पीड़ा और सामाजिक विक्षोभ के लेखन के प्रत्यक्ष अनुभवी, शोषण और अनाचार

के खिलाफ पीड़ित मानवता के प्रतिरोधक मोर्चाबन्दी करने वाले छद्म वामपंथी, बनावटी प्रगतिवाद तथा नकली समाजवाद के वातावरण में भारत की सोंधी मिट्टी की राष्ट्रीयता से जन–जन तक जुड़े कबीर के समान फक्कड़, निराला सदृश अक्खड़, राहुल सांकृत्यायन के समान मस्तमौला तथा दिनकर जैसे राष्ट्रीय भावना वाले बाबा नागार्जुन ने अपनी सीधी और सपाट वाणी से भारत के उर्वर धरातल पर अपनी मानवीय संवेदनाओं की जो लकीर खिंचे है वे उनके समय में ही फलीभूत होते दिखाई दे रहे थे। अपने व्यंग्य, चुटीले एवं तीखे प्रहारों से उन्होंने सत्ता की चोटी पर बैठे राजनीतिज्ञों, धर्माचार्यों, धनकुबेरों और अफसरशाहों को भी नहीं छोड़ा जिस प्रकार कबीर के दर्शन पर सूफिसंतों, नाथपंथों एवं वेद–वेदांत दर्शनों का प्रभाव पड़ा था उसी प्रकार बाबा नागार्जुन पर कबीर के आलावा गौतम बुद्ध, कालमार्क्स, मुंशी प्रेमचंद तथा जैन मुनियों के धर्म–दर्शन, गोर्की, टालस्टाय, लूशुन, चेखव आदि महान विभूतियों के दर्शन का प्रभाव पड़ा था स बाबा नागार्जुन सामंतवाद, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद और यथास्थितिवाद के प्रबल विरोधी रहें हैं तथा बुद्धवाद, साम्यवाद, राष्ट्रीयमुक्ति एवं समाजवाद के पक्षधर रहे है।

कबीरदास के रचनाओं के केंद्र बिंदु में जिस प्रकार जनता के दुःख–दर्द, उनकी मुक्ति, उत्थान आदि विषय था, उसी प्रकार बाबा नागार्जुन की रचना संसार को सर्वहारा का संसार कहा जा सकता है। कबीर की भॉति धन और धर्म का समीकरण तथा राजनीतिक शक्तियों के गठबंधन पर चोट करने वाली उनकी एक कविता बहुत प्रसिद्ध हुई :–

"खड़ी हो गयी चॉप कर, कंकालों की हूक
नभ में बिपुल विराट सी, शासन की बन्दूक
जली ठूँठ पर बैठकर, गयी कोकिला कूक
बाल न बांका कर सकी, शासन की बन्दूक"[4]

जिस प्रकार कबीरदास के जमाने में मठाधीशों के अत्याचार से समाज कराह रहा था। पूरे समाज के दो तिहाई जनता जिनको क्षुद्र घोषित कर रखा था मठाधीशों ने, वे क्षुद्र जनता पशु के समान जीवन जीने को अभिशप्त थे। उनकी मुक्ति के लिए कबीरदास ने मठाधीशों से सीधे टक्कर लिए एवं अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाए। ठीक उसी प्रकार बाबा नागार्जुन ने आम जनता के समस्याओं के समाधान हेतु सरकार, नेता तथा सभ्य कहे जाने वाले समाज से दो–दो हाथ किये। बेधड़क उनकी आलोचना किये, जिनके कारण कबीरदास की तरह उन्हें भी यातनाएं सहनी पड़ी, जेल जाना पड़ा। फिर भी वे अपनी कविताओं का विषय मजदूर, किसान, रिक्शाचालक, श्रमिक, कुल्ली, चटकल मजदूर, ड्राईवर, भिखारी, मूकवाणी वाली नारी, नंगधडंग लड़कें, फसल रोपती और

काटती किशोरियॉं, मछली मारते बच्चे, असहाय वृद्ध विधवा, परित्यक्ता, ऋणग्रस्त कृषक, देशभक्त सैनिक, निश्छल प्रेमी, रूढ़ियॉं तोड़ते युवक–युवतियॉं आदि को बनाया है जो विरले किसी कवि में देखने को मिलता है, बाबा नागार्जुन किसी भी विचारधारा से अपने को बॉंधकर न रखने वाले मस्त और स्वतंत्र स्वभाव के इन्सान रहें हैं। वे सर्वांगदर्शन कवि है। उनकी आँख कैमरे की तरह हर जगह घूमी है। वे इन्दिरा गाँधी से 'क्या हुआ आपको' कविता में कहते है :–

"इन्दु जी, इन्दु जी, क्या हुआ आपको
सता की मस्ती में भूल गयी बाप को क्या हुआ आपको।" [5]

इसी प्रकार भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी पर भी बिना हिचकिचाए व्यंग्य करते है :–

"वतन बेंचकर पंडित नेहरू,
फुले नहीं समाते है।
फिर भी बापू की समाधी पर,
झुक–झुक कर फूल चढाते हैं। "[6]

इसी प्रकार 'आओ रानी ढोए हम पालकी' 'रानी मक्खी' 'दिन लद गये लिबर्टी' 'खड़ी है वे ट्रेन' 'नेहरु' 'बजट वार्तिक' 'जयति जय सर्वमंगला' आदि कविताओ में नेताओं की राजनैतिक स्वार्थलोलुपता पर करारा व्यंग्य निर्भीकता के साथ रखें हैं बाबा नागार्जुन। साथ ही 'भले पधारे निजिलिगाप्पा' 'आये दिन बाहर के' 'फिर भी हमें न देना वोट', 'तुम रह जाते 10 साल और' 'बुढा शेर' 'चीलों की चली बारात' 'नातियों का बाप' 'मै हूँ सबके साथ' 'वे तुमको गोली मारेंगे' 'आओ आओ' आदि कविताओं में बाबा नागार्जुन ने जिस हिम्मत और बहादुरी के साथ सत्ताधीशों के विरुद्ध आवाज बुलंद की है वे कोई कबीरपंथी ही कर सकता है। सबके बूते की बात नहीं थी। इन कविताओं के अध्ययन से लगता है कि बाबा नागार्जुन पूँजीवादी व्यवस्था की पैतरेबाजियों और शोषक वर्ग की कालावाजियों को बहुत निकट से और सूक्षमता से समझा है। उनके तिकड़म को उघाड़कर रख देना कवि की पैनी और अचूक दृष्टि का परिचायक है। बाबा नागार्जुन एकमात्र कवि है जो अपने काव्य के अनुदाता का ख्याल किये बिना जन समस्याओं को अंकित कर लेते है।

डॉ. नामवर सिंह ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि नागार्जुन की बीहड़ कल्पना रिक्शा खींचने वाले, फटी विवाईयॉं वाले, गुट्टल घटठो वाले, कुलिश कठोर खुरदरे पैरो के चित्र भी ऑंकती है और उसकी पीठ पर फटी बनियाईन के नीचे 'क्षार–अम्ल, विगलनकारी दाहक पसीने का

गुण–धर्म' भी बतलाती है । मनुष्य के ये वे रूप है जो नागार्जुन न होते तो हिन्दी कविता में शायद ही आ पाते।"[7]

इस प्रकार हम निष्कर्षतः कह सकते है कि कबीरदास जिस प्रकार अपनी उक्तियों द्वारा श्रोताओं को बल पूर्वक आकृष्ट करते है जिस अक्खड़पन, निर्भीकता, निडरता से समाज में फैली हुई कुरूतियॉ, उॅच–नीच, छुआछूत, भेदभाव, जात–पात, बाह्य आडम्बर आदि का विरोध कबीर दास ने किया है ठीक उसी प्रकार बाबा नागार्जुन ने भी वर्तमान समाज संचालकों, सत्ताधीशों के खिलाफ निडरता से अपनी बात रचनाओं के माध्यम से रखी है। जिस प्रकार कबीर की भाषा के बारे में आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी ने कहा है कि भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार थास वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया, बन गया तो सीधे–सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।[8] उसी प्रकार बाबा नागार्जुन ने भी देसी भाषा के अलावा कई अन्य भाषाओं को भी अपने काव्य में स्थान दिया है। व्यंग्य के भी दृष्टिकोण से बाबा नागार्जुन कबीरदास से कम नहीं है। कबीरदास ने तत्कालीन व्यभिचार पर, उनकी गलत नीतिओं पर बहुत ही करारा व्यंग्य किया है। आधुनिक काल में नागार्जुन ने भी तत्कालीन सत्ताधीशों पर करारा व्यंग्य किये है। इसके अलावा प्रतिक–योजना, बिम्ब–योजना, शैली इत्यादि दृष्टिकोण से भी देखा जाय तो कबीर और नागार्जुन में काफी हद तक समानता नजर आती है इसलिए बाबा नागार्जुन को आधुनिक कबीर कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

(1) कबीर वाणी : परिशिष्ट–2, आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी, पृष्ठ संख्या – 320

(2) कबीर साहित्य की प्रासंगिकता, डॉ. शुकदेव सिंह, पृष्ठ संख्या–8

(3) वागर्थ पत्रिका, दिसम्बर– 2018, सम्पादकीय पृष्ठ संख्या–11

(4) नागार्जुन का रचना संसार–विजय बहादुर सिंह, पृष्ठ संख्या–57

(5) नागार्जुन रचनावली भाग–2 पृष्ठ संख्या –81

(6) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पत्रिका, मार्च–2019 पृष्ठ संख्या –269

(7) वही, पृष्ठ संख्या–209

(8) कबीर – हजारी प्रसाद दिवेदी, राजकमल प्र० नई दिल्ली– 1993, पृष्ठ संख्या – 131